बी०ए० भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
काव्यशास्त्र (उपन्यास)

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
बी० के० कालेज,
डुमराँव, बक्सर



## उपन्यास का स्वरूप -

उपन्यास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - उप+न्यास। उप का अर्थ है - समीप और 'न्यास' का अर्थ है रखना। इस तरह 'उपन्यास' का शब्दगत अर्थ है 'समीप रखना' या मनुष्य के निकट रखी हुई वस्तु अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर लगे कि वह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गयी है। आज जिस विधा के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसकी प्रकृति को स्पष्ट करने में यह शब्द समर्थ है। उपन्यास में मानव जीवन अपेक्षाकृत अधिक समीपता के साथ चित्रित होता है।

उपन्यास के लिए अंग्रेजी में 'नॉवेल' (Novel) शब्द प्रयुक्त होता है। 'न्यू इंग्लिश डिक्शनरी' में नॉवेल की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी गयी है, "नॉवेल वह विस्तृत गद्यात्मक आख्यान प्रधान रचना है जिसमें वास्तविक जीवन का अनुकरण करने वाली घटनाओं और पात्रों का एक व्यवस्थित कथा-वस्तु के रूप में वर्णन रहता है।"

मुंशी प्रेमचंद उपन्यास को वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा मानते हैं। वे लिखते हैं, "मैं उपन्यास को वास्तविक जीवन की काल्पनिक

कथा मानते हैं। "मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"

गद्य की प्रमुख विधाओं में उपन्यास सबसे आधुनिक विधा है। डॉ. गोपाल राय ने उपन्यास के उदय की परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि, ईसवी सन् की पहली सहस्त्राब्दी में दुनिया की किसी भी भाषा में उपन्यास नहीं मिलता

हिन्दुस्तान में इस प्रकार की परिस्थितियाँ औपनिवेशिक शासन के बाद निर्मित हुई। भारतीय नवजागरण से हिन्दी उपन्यास के विकास का गहरा संबन्ध है। बंगाल और महाराष्ट्र की तुलना में हिन्दी नवजागरण की प्रक्रिया कुछ बाद में आरंभ हुई। इसीलिए हिन्दी उपन्यास का विकास भी बंगला और मराठी के कुछ बाद में आरंभ हुआ। हिन्दी में नॉवेल के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का पहला प्रयोग 1875 ई में हुआ। जबकि बंगला में नॉवेल के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का पहला प्रयोग भूदेव मुखोपाध्याय ने 1862 ई में किया था।

आरंभिक हिन्दी उपन्यास या प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास का समय सन् 1871 से 1918 ई० तक माना जा सकता है।

सन 1877 में श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक सामाजिक उपन्यास लिखा था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस उपन्यास की प्रशंसा की है। यद्द भले ही अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास न हो किन्तु विषय-वस्तु की नवीनता के आधार पर इसे हिन्दी का प्रथम आधुनिक उपन्यास कहा जाता है।

पं० गौरीदत्त की रचना 'देवरानी-जेठानी की कहानी' भी एक शिक्षा-प्रधान उपदेशात्मक रचना है जिसका प्रकाशन 1870 ई. में हुआ था। किन्तु इसे उपन्यास कहने में आलोचकों ने संकोच किया है। दरअसल, लाला श्रीनिवास दास का अंग्रेजी ढंग का नॉवेल 'परीक्षा गुरु' और श्रद्धाराम फुल्लौरी का 'भाग्यवती' ही हिन्दी के आरंभिक उपन्यासों के रूप में रेखांकित किये जा सकते हैं। 'परीक्षा गुरु' का प्रकाशन सन् 1882 में हुआ था।

उपन्यास की रचना करने वाले तत्वों की संख्या छह मानी जा सकती है - कथानक (वस्तु या प्लाट), चरित्र या पात्र, संवाद या कथोपकथन, देशकाल, शैली, उद्देश्य। कुछ लोग घटनाओं को भी एक तत्व मानते हैं। किन्तु इसे कथानक के भीतर समेटा जा सकता है। परंतु इन प्रचलित छह तत्वों के विषय में विद्वान एकमत नहीं हैं कुछ विद्वान उद्देश्य के स्थान पर 'रस' को स्वीकार करते हैं और कुछ उद्देश्य को भी एक तत्व मानते हैं तथा रस को भी।

उपर्युक्त तत्व एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक दूसरे की सहायता करते हैं। हम उपन्यास में अपेक्षा करते हैं कि उपन्यास की कथावस्तु के विविध प्रसंग या घटनायें एक सूत्र में इस तरह पिरोयी गयी हों कि वे अलग-अलग न लगें। प्रेमचंद के सर्व लिखे गये मौलिक उपन्यासों को हम पाँच श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं - सामाजिक उपन्यास, ऐयारी-तिलिस्मी उपन्यास, जासूसी उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास और भावप्रधान उपन्यास।

प्रेमचंद को आधार बनाकर हम हिन्दी उपन्यास के विस्तृत अध्ययन की सुविधा हेतु इस तरह बाट सकते हैं- प्रेमचंद पूर्व उपन्यास, प्रेमचंद युगीन उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास, स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास और साठोत्तर उपन्यास। आज उपन्यासों का भी दलित-चेतना और स्त्रीविमर्श के आधार पर वर्गीकरण किया जाने लगा है। उपन्यास साहित्य की व्यापकता और महत्व को देखते हुए यह विभाजन उचित ही है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)